"स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले से"

दिनांक: 15.8.59

बहिनों और भाईयों और साथियों,

आज फिर आप और हम यहां जमा हुए हैं, एक सालगिरह मनाने अपने आज़ाद हिन्द की सालगिरह और आज फिर हम कुछ तो पीछे देखते हैं कि क्या हमने किया और कुछ आगे देखते हैं कि क्या हमें करना है । बारह बरस हुए, हज़ारों बरस के इतिहास में इस मुल्क के, इस क़ौम के, बारह बरस बहुत कम ज़माना है । यहां दिल्ली के इधर-उधर की मिट्टी ने और पत्थरों ने हजारों बरस को आते और जाते देखा और अब इन बारह बरसों को भी देखा, जिसमें आपने, हमने और हिन्दुस्तान के रहने वालों ने कोशिश की पुराने ज़माने से, पुरानी मुसीबतों से, पुरानी गरीबी से अपने को निकालने की । मुश्किल काम था, गुलामी को दूर करने से ज़्यादा मुश्किल था, क्योंकि इसमें अपनी कमजोरियों को निकालना था, और पचासों पुराने बोझे जो हमारी पीठ पर थे, उनको हटाना था । बारह बरस में क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, वह आपके सामने है । बहुत अच्छी बातें हुईं, कुछ बुरी बातें हुईं । बहुत बातें हुईं, जो मैं समझता हूं भारत के आईन्दा के इतिहास में लिखी जाएगी, और ऐसी बातें भी हुईं जिन्होंने हमें कमजोर किया, या हमारी कमजोरियां जाहिर हुईं । तो फिर आज हम और आप मिले यहां, इस लाल-किले के पास और अपने झण्डे को फिर से फहराया ।

तो क्या आपके दिलों में है बात, क्या सोचते हैं आप आईन्दा के लिए ? इन बारह बरसों में काफी कठिनाईयों का सामना किया, मुसीबतों का, बाहर से, अन्दर से । काफी हमारे ऊपर प्रकृति की भी भेजी हुई मुसीबतें आईं, कभी बाढ़, कभी अकाल, कभी फसलें खराब हुईं, काफी हमारी अपनी कमजोरियों ने भी हमारा पीछा किया । हममें से लोगों ने गलत रास्ते उठाए, अपने लोभ में, खुदगर्जी में भूल गए कि

कौम का और जाति का फायदा किस में है, भूल गए कि हम बड़े कामों में लगे हैं, इस मुल्क को फिर एक शानदार और एक बड़ा मुल्क बनाना और वक्ती खुदगर्जी में फंस के, उन्होंने कौम को जाति को हानि पहुंचाई । आप लोग आजकल भी कुछ दिक्कतों में हैं, परेशानियों में हैं, महंगाई की और इस तरह की बातें, कुछ तो लाचारी है, पूरी तौर से काबू की बात नहीं हमारे इस समय, हालांकि काबू में वह आएगी । कुछ इंसान की बनाई हुई, इंसान की खुदगर्जी की बनाई हुई जो भी कुछ हो, उसका सामना करना है । लेकिन आज के दिन विशेष-कर हमें याद रखना है हम क्या हैं, क्या होना चाहते हैं, किस रास्ते पर चलना चाहते हैं । फिर से ज़रा बारह बरस के पहले के ज़माने को याद करना है जबकि हमारे बड़े नेता गांधी जी हमारे साथ थे और उनकी तरफ हम देखते थे, बरसों तक उनकी तरफ हमने देखा, बरसों तक हमने उनके रास्ते पर चलने की कोशिश की, और उस पर चलके सफलता मिली हमें । कहां तक हमें वह बातें याद हैं, कहां तक उसको हम सामने रखते हैं अपने, कहां तक हम इस बात को हर वक्त याद करते हैं कि पहला काम हमारे मुल्क में अपनी एकता को बनाना है, क्योंकि अगर हम अलग-अलग टुकड़े में हो गए, अलग-अलग टुकड़े चाहे वह सूबे के हों, चाहे वो भाषा के हों, चाहे जाति के, धर्म के या कोई और हों, तब सारी हमारी ताकत खत्म हो गयी, तब हम गिरते हैं, आगे नहीं बढ़ते । तब बजाए इसके कि आईन्दा का हमारा इतिहास एक चमकता हुआ हो, छोटी-छोटी कौमों की लड़ाई का हो जाता है । इसलिए पहली बात याद रखने की है हमारी एकता, और यह कि जो हमारे आपस में दीवारें हैं, पुरानी या नई उनको हमें तोड़ना है और हमेशा हमें सोचना है अपने मुल्क की भारत की और एक उसके हिस्से की नहीं, चाहे वह हिस्सा कितना ही भला और अच्छा क्यों न हो । क्योंकि वह हिस्सा अगर उसमें कुछ ऊंचाई है तो इसलिए कि भारत का वह हिस्सा है भारत के हिस्से न होने पर उसकी कोई ऊंचाई और अहमियत नहीं रहती । तो यह बात हमें याद करने की है, क्योंकि इस ज़माने

-3/

में रह कर हम अपने जातिभेद में, इस कदर आदी हो गए टुकड़ों-टुकड़ों में रहकर कि मिलकर रहने की आदत पूरी नहीं आई । इसको भी हमें हटाना है और इस पर भी फतेह पानी है]। दूसरीबात यह कि हमारे आईन्दा का ध्येय क्या, मकसद क्या ? आर्थिक है, सामाजिक है, हिन्दुस्तान से गरीबी निकालनी है, सब बातें कही जाती हैं और सही है लेकिन आखिर में किस गज़ से आप इन बातों को नापेंगे । एक गज़ गांधी जी ने हमें बताया था, और हमने स्वीकार किया कि किस तरह से हिन्दुस्तान के आम लोग आगे बढ़ते हैं । खास लोग बढ़े हुए हैं, उनकी कोई खास फिक्र नहीं करनी है । वह अपने को देखभाल भी कर लेते हैं, ऊंची आवाज़ से शिकायत भी कर सकते हैं जब ज़रूरत हो, लेकिन जो आम लोग हैं, जो अक्सर खामोश लोग हैं और खासकर जो हमारे लोग गांव में रहते हैं उनकी देखभाल कौन करें, कौन उनको उठाएं ? क्योंकि याद रखिये दिल्ली शहर एक खास शहर है, हिन्दुस्तान का और दुनियां का, और आप और हम जो दिल्ली में रहते हैं, वह एक माने में खुशनसीब हैं, लेकिन दिल्ली शहर हिन्दुस्तान नहीं है, हिन्दुस्तान की राजधानी है ।

हिन्दुस्तान तो लाखों गांव का है और जब तक वह लाखों गांव हिन्दुस्तान के नहीं उठते, नहीं जागते, नहीं आगे बढ़ते, तो दिल्ली और बम्बई और कलकत्ता और मद्रास हिन्दुस्तान को नहीं आगे ले जाएंगे । इसलिए हमेशा हमें अपने सामने यह लाखों गांवों को रखना है, किस तरह से वह बढ़ें, किस तरह से बढ़ेंगे वह ? आपकी और मेरी कोशिश से ज़रूर, लेकिन आखिर में वह बढ़ेंगे अपनी कोशिश से, अपनी हिम्मत से, अपने ऊपर भरोसा कर के, और इस वक्त जो हमारे ऊपर एक मुसीबत आई है, वह यह कि हमारे लोग अपने ऊपर भरोसा करना भूल के समझते हैं कि और लोग मदद करेंगे । हमारे गांव वाले तगड़े लोग हैं, भले लोग हैं । हर वक्त एक आदत पड़ गई है देखें कि सरकारी अफसर कुछ कर दें, सरकार उनके लिए कुछ कर दे, बजाए इसके कि खुद उठ खड़े हों और काम करें । इसीलिए योजनाएं बनीं, कि वह खुद करें

विकास योजना, कम्युनिटी डेवेलपमेन्ट वगैरह और अगर वह ठीक-ठीक चलें, तो एक क्रान्तिकारी चीज़ है भारत के लिए, दुनियां के लिए, —— सारे हिन्दुस्तान के बाढ़े पांच लाख गांव जाग उठें ।

और अगर वहां महज़ सरकारी अफ़सर काम करते हैं, तब क्रान्ति नहीं है । तब तो एक मामूली ढंग, एक अफ़सरी ढंग है जो बेजान हो जाता है । जान अन्दर से आती है, ऊपर से नहीं डाली जाती है किसी कौम में । इसलिए हमारे लिए यह बड़ा ख्याल हो गया है इस मुल्क में, चाहे शहर के रहने वाले हों, चाहे गांव के, देहात के, कि हम लोग अपने पैरों पर, टांगों पर खड़े हों अपने सहयोग से काम करें ज़रूर, हुकूमत को मदद करनी है हर तरह से शासन को, अफ़सर को, लेकिन अफ़सरों की मदद से कौम नहीं बढ़ती है, क़ौम अपने पैरों से बढ़ती है । और यह बात विशेषकर गांव के लिए है, इसीलिए हमने कहा कि सहयोग, सहकारी समितियों में काम हों, कि लोगों की शक्ति बढ़े, लोग मिलकर काम करना सीखें और अपने ऊपर भरोसा करना सीखें । इसके माने नहीं कि एक जो शासन हो, जो हुकूमत हो वह हर जगह दखल दें । मैं तो चाहता हूं कि हुकूमत का दखल कम से कम हो, और लोग अपने हाथ में बागडोर अपनी लें । हां, जो बड़ी उसूली बातें हैं, वह निश्चय हों । तो यह एक दूसरी बात याद रखने की है । किस गज़ से हम नापें हिन्दुस्तान की तरक्की ? वह एक ही गज़ है किस तरह से यहां के चालीस करोड़ लोग बढ़ते हैं । कैसे बढ़ती है क़ौम ? अपनी मेहनत से । कैसे गरीब क़ौम खुशहाल होती है ? अपनी मेहनत से । कोई जाके औरों की खैरात से तो उठते नहीं लोग । तो अगर हमारे लोग बढ़ेंगे, तो अपने परिश्रम और मेहनत से जिससे वह पैदा करें, दौलत पैदा करें, धन पैदा करें, जो मुल्क में फैले । और मुल्क दुनियां के खुशहाल मुल्क हैं बाज़, बाज़ गरीब हैं । खुशहाल मुल्कों को आप देखिए, कैसे हुए हैं खुशहाल वह ? मेहनत से और और परिश्रम से चाहे योरोप के, चाहे अमेरिका के, चाहे कोई एशिया के मुल्क जो हैं ऐसे, खुशहाल हों । सभों के पीछे मेहनत है, परिश्रम है, रात और दिन की मेहनत है और एकता है । दो चीज़ों ने उनको बढ़ाया, बगैर इसके नहीं कोई बढ़ता । हमारे यहां अभी

हिन्दुस्तान में, काफी मेहनत करने की आदत आमतौर से नहीं हुई है । हमारा कसूर नहीं, आदतें ऐसी पड़ जाती हैं, वाक्यात से । लेकिन बात यह है कि हम इतना काम नहीं करते, जितना कि योरोप वाले या जापान वाले या चीन वाले या रूस वाले कहीं करते हैं, या अमेरिका वाले । यह न समझिए कि वह कौमें खुशहाल हो गई, कोई जादू से, मेहनत से हुई हैं और अक्ल से हुई हैं । तो हम भी मेहनत और अक्ल से बढ़ सकते हैं कोई और चारा नहीं, कोई जादू से हम नहीं बढ़ सकते । क्योंकि दुनियां चलती है इन्सान के काम से, इन्सान की मेहनत से सारी दुनियां की दौलत पैदा होती है, चाहे जमीन पर किसान काम करता है, या कारखाने में, या दूकान में या कारीगर; उससे काम चलता है । कुछ बड़े अफसर दफ्तरों में बैठ के इंतजाम करते हैं, वह दौलत नहीं पैदा करते हैं । दौलत पैदा करता है किसान अपनी मेहनत से, या कारीगर या । तो हमें अपने काम, अपनी मेहनत को बढ़ाना है ।

अभी मुझे खुशी हुई देखकर कि पंजाब के सूबे में काम करने के वक्त बढ़ाये गये, इससे पंजाब की दौलत बढ़ेगी, पंजाब के लोगों को फायदा होगा, और किसी को नहीं । हमारे यहां छुट्टियां हैं इतनी छुट्टियां हैं कि इसमें कोई मुल्क हमारा मुकाबला नहीं कर सकता, दुनियां भर में । छुट्टी अच्छी चीज़ है; आदमी को ताजा करती है, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा छुट्टी जरा कमजोर भी कर देती है और काम की आदत भी निकल जाती है ।

तो हम इस वक्त आप जानते हैं एक दरवाजे पर हैं, तीसरे पंचवर्षीय योजना के । पहले दो हो गए, और उससे हमें लाभ हुआ, फायदा हुआ और ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ें, हमारे सवाल भी बढ़े हमारे सामने, सवालों ने हमें घेरा, हाथ-पैर हमारे पकड़े, और अक्सर उनका बोझा बहुत ज़बर्दस्त हो गया । लेकिन हम बढ़े और यह बढ़ने की निशानी है कि सवाल भी हमारे सामने आए हैं । जो नहीं आगे बढ़ता उसके सामने न सवाल हैं, न जवाब हैं । आज भी हम सवालों से घिरे हैं, परेशानियों से घिरे हैं, लेकिन वह परेशानियां और वह

सवाल एक बढ़ते हुए मुल्क के हैं, और बढ़ रहा है एक बुनियाद से, हालांकि उसकी तकलीफ़ भी उठानी पड़ती है । बन रहे हैं बड़े-बड़े लोहे के कारखाने, बन रहे हैं तरह-तरह के बड़े, क्या माने हैं इसके, वह कोई कारखाना खाली नहीं है, बल्कि वहां से एक नई जान निकलेगी, जिससे हिन्दुस्तान के कोने-कोने में बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे, बड़े-बड़े इण्ड-स्ट्रीज़ बनें, वह एक बुनियाद होगी, कि यहां लाखों आदमियों के लिए काम निकले और वह लाखों आदमी अपने काम से दौलत पैदा करें । इस तरह से आप देखें, सारे पंचवर्षीय योजना खाली एक एक चीज़ इधर बनानी नहीं है, बल्कि एक ज़बर्दस्त इमारत बनानी है, आज़ाद और खुशहाल हिन्दुस्तान की । अब उसके बनाने में बुनियाद है, और जब वह बुनियाद मज़बूत न हो, ऊपर से वह कैसे बने । बुनियाद दिखती नहीं है हालांकि अब दिखने लगी है । तो यह दो पंचवर्षिय योजनाओं में हुआ, और हो रहा है । तीसरी आती है आपके दरवाज़े पर है, अभी साल डेढ़ बरस बाद, दो बरस बाद, उसकी अभी से तैयारी है और मैं चाहता हूं आप समझें उसको, क्योंकि वह भी कोई आराम का वक्त नहीं लायेगी । हमें जोर कर के उसको भी पूरा करना है, मेहनत से बगैर मेहनत के बगैर तकलीफ उठाए कोई कौम बढ़ती नहीं है । जो लोग नहीं करते हैं वह ढीले हो जाते हैं, उनका मुल्क ढीला हो जाता है, उनका कदम हल्का हो जाता है ।

तो हमारे सामने फिर से इम्तहान है एक चुनौती है दुनियां का, और दुनियां की नज़रें भी किसी कदर हमारी तरफ है । यह एक बड़ा ज़बर्दस्त मुल्क, जिसने इस ज़माने में भी एक ऐसा आदमी पैदा किया, जैसे महात्मा गांधी, अब क्या करता है, और अब क्या करता है खाली इस बारे में नहीं कि विकास योजनाएं और हम कारखाने बनाएं और अपनी खेती की तरक्की करें, और अपने यहां गल्ला ज्यादा पैदा करें, जो जो ज़रूरी बातें हैं हम करें, लेकिन किस ढंग से हम इन बातों को करते हैं, शान से, सिर ऊंचा कर के, या सिर झुका के और बुरे रास्तों पर चलके । यह बात याद रखने की है । क्योंकि जो अव्वल, अव्वल दूसरा और तीसरा सबक गांधी जी ने हमें सिखाया, वह सिर ऊंचा

-7/

रखने का है, वह यह कि कभी गलत बात न करें, कभी झूठे रास्ते पर न चलें, कभी खुदगर्जी में पड़ के मुल्क को नुकसान न करें। यह उनका बुनियादी सबक था, बड़ों के लिए, बच्चों के लिए। और जिस वक्त हम उसको भूलें, उस वक्त हम गिरते हैं। इसलिए बारह बरस गुजरे और तेरहवें बरस में हम और आप कदम उठाते हैं, सिर ऊंचा करके कदम उठाइए, पैर मिला के आगे चलिए, हाथ मिलाके आगे चलिए, और इस इरादे कर के कि जो हमारी मंजिल है वहां हम वक्त से पहुँचें।

जयहिन्द।

00000
000
0